International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 02(II), April - June, 2024, pp. 72- 79

विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों का ट्यूशन एवं कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

सोनिया भारद्वाज*
डॉ.रामशरण मिश्रा**

प्रस्तावना :

निजी ट्यूशन एवं कोचिंग दुनिया में एक व्यापक घटना है जो जांच के लायक है और यह शिक्षा के एक विशिष्ट स्तर तक सीमित नहीं है। यह भी ध्यान रखना बहुत आवश्यक है कि शिक्षा के सभी स्तरों पर निजी ट्यूशन एवं कोचिंग की पर्याप्त मात्रा में मांग है। यह शिक्षा की एक समानांतर प्रणाली बन गई है जिसे जीवन के सामान्य अंग के रूप में देखा जाने लगा है। निजी शिक्षण एक विश्वव्यापी दुविधा बन गया है जिसमें मुख्य रूप से तीन उद्देश्य शामिल हैं **जो संवर्धन, उपचार और परीक्षा की तैयारी के लिए हैं।** माता–पिता इसे अपने बच्चों की शिक्षा को बनाए रखने की सामान्य प्रवृत्ति मानते हैं। निजी ट्यूशन एवं कोचिंग ग्रेड खरीदने के लिए समर्थन करने जैसा है और एक तरह से शैक्षिक भ्रष्टाचार का संकेत है।

आजकल निजी ट्यूशन एवं कोचिंग का उद्योग कुटीर उद्योग से बदलकर पूर्ण फैक्ट्री प्रणाली में बदल गया है। प्रतीची रिपोर्ट 2002–09, निजी शिक्षण पर निर्भरता की स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करती है। रिपोर्ट से पता चला है कि प्राथमिक शिक्षा में निजी ट्यूटर पर निर्भर छात्रों की संख्या 57 प्रतिशत से बढ़कर 64 प्रतिशत हो गई है। रिपोर्ट में यह भी पाया गया कि वर्ष 2002 में 78 प्रतिशत माता–पिता इस दृढ़ विश्वास के थे कि निजी ट्यूटर्स के अलावा उनके बच्चों की शिक्षा का कोई समाधान नहीं है। 2009 में एससीईआरटी पश्चिम बंगाल के आंकड़े बताते हैं कि प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले 71 प्रतिशत छात्र और उच्च–प्राथमिक विद्यालयों में 80 प्रतिशत छात्र ट्यूशन कक्षाओं में भाग लेते हैं।

लगभग 41,000 (2019) सरकारी मेडिकल सीटों के लिए छम्म्ज के लिए 150,000 से अधिक लोग उपस्थित हुए। एनईईटी आदि में शामिल होने वाले अभ्यर्थियों की कुल संख्या की तुलना में चिकित्सा संस्थानों में मान्यता प्राप्त छात्रों की निराशाजनक सीमा के बावजूद, बड़ी संख्या में बच्चे एलन, आकाशी, फिटजी और अन्य जैसे संस्थानों का चयन करते हैं। इन शिक्षण सिद्धांतों को प्लेसमेंट परीक्षणों में विजयी होने के मार्ग के रूप में देखा जाता है। प्रशिक्षण फाउंडेशन का गुस्सा भारत में स्नातकोत्तर अध्ययन और एमबीए तक भी पहुंचता है। प्रत्येक दिसंबर में, शीर्ष भारतीय बिजनेस स्कूलों में प्रवेश पाने के लिए कुछ उम्मीदवार कॉमन एडमिशन टेस्ट (कैट) में शामिल होते हैं।

* शोधाकर्त्री, शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा विभाग, श्याम विश्वविद्यालय,दौसा, राजस्थान, भारत
** पर्यवेक्षक, शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा विभाग, श्याम विश्वविद्यालय,दौसा, राजस्थान, भारत

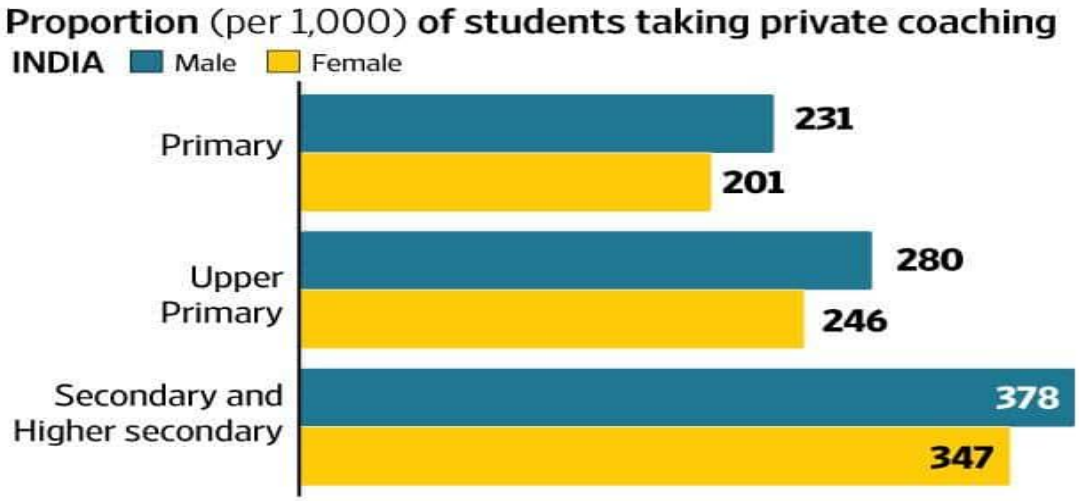

Source: www.livemint.com

भारत में निजी शिक्षण की एक प्रणाली मौजूद है, जो शिक्षा की औपचारिक प्रणाली के समानांतर चल रही है। यह पूरे देश में तेजी से बढ़ते अनेक शिक्षण केन्द्रों से स्पष्ट रूप से स्पष्ट है। ये निजी शिक्षण केंद्र औपचारिक शैक्षणिक मोड के पूरक हैं और स्कूल की अपर्याप्तताओं को दूर करने में मदद करते हैं। अपनी प्रकृति, विस्तार और महत्व की दृष्टि से यह औपचारिक व्यवस्था की छाया की तरह है।

ये निजी शिक्षण केंद्र लगभग औपचारिक स्कूल प्रणाली की सरोगेट माताओं की तरह बन गए हैं। निजी ट्यूशन एवं कोचिंग को एक भ्रष्टाचार के रूप में देखा जाता है जो शिक्षा प्रणाली की अक्षमता को मजबूत करता है। हाल के दिनों में इसकी वृद्धि कई गुना बढ़ गई है और इस प्रकार यह सरकारी नीतियों के मूल और औपचारिक स्कूल प्रणाली के महत्व को प्रभावित कर रही है। यह देश की शिक्षा व्यवस्था के मूल में प्रवेश कर चुका है।

समस्या कथन :

प्रस्तुत शोध पत्र निम्नलिखित शीर्षक के अन्तर्गत लिखा गया है:–

"विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों का ट्यूशन एवं कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन"

शोध की आवश्यकता एवं महत्व :

आजकल बच्चों को प्राइवेट ट्यूटर एवं कोचिंग भेजना फैशन में है। और यह व्यवस्था अब केजी क्लास से ही शुरू हो रही है। निजी ट्यूशन एवं कोचिंग कक्षाएं अब कोटा में औपचारिक शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग बन गई हैं। प्रत्येक विषय के निजी शिक्षण के लिए जाने वाले छात्रों के साथ, निजी शिक्षण तेजी से समानांतर स्कूली शिक्षा प्रणाली की स्थिति प्राप्त कर रहा है। छात्रों को शैक्षिक सीढ़ी पर चढ़ने के बजाय उनके माता–पिता द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा है और वे अपने माता–पिता और निजी शिक्षक के समर्थन के बिना सफल नहीं हो सकते।

राज्य में निजी ट्यूशनों एवं कोचिंग के उदय के लिए कुछ सम्मोहक कारकों में प्रतिष्ठित स्कूलों में स्थानों की मांग, मुख्यधारा के स्कूलों में अप्रभावी शिक्षण सीखने की प्रक्रिया, बड़े स्कूल वर्ग के आकार, सामान्य हड़तालें, बंद, नाकेबंदी, छात्र निकायों द्वारा कक्षा बहिष्कार या बंद करना शामिल हैं। शिक्षकों द्वारा काम पर हड़ताल और व्यक्तिगत ध्यान की कमी, माता–पिता और साथियों का दबाव, और अन्य गड़बड़ी। शिक्षा पैटर्न में बदलाव यह है कि स्कूल परीक्षा आयोजित करने और प्रमाण पत्र देने के लिए हैं, जबकि वास्तविक शिक्षण निजी ट्यूशन एवं कोचिंग केंद्रों में किया जा रहा है।

कोटा में किराने की दुकानों की तरह हर जगह निजी ट्यूशन एवं कोचिंग सेंटर खुल रहे हैं। अधिकांश केंद्रों में संदिग्ध साख और उचित गुणवत्ता रखरखाव है। तकनीकी और व्यावसायिक परीक्षाओं जैसे नीट (एमबीबीएस), आईआईटी, जेईई, आदि और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए, ट्यूशन एवं कोचिंग के लिए जाना एक अलग परिदृश्य है और यह काफी आवश्यक और उचित है। लेकिन हाई स्कूल स्तर के दौरान पहली कक्षा से ट्यूशन एवं कोचिंग के लिए जाना शिक्षा को एक हास्यास्पद वस्तु बनाता है और यह एक अस्वास्थ्यकर अभ्यास भी है। छात्र दिन–ब–दिन निजी ट्यूशन एवं कोचिंग पर निर्भर होते जा रहे हैं और स्कूल का मूल्य कम हो रहा है। वर्तमान अध्ययन में, अन्वेषक निजी ट्यूशन एवं कोचिंग की उभरती प्रवृत्ति और इसके कारणों, प्रभावशीलता पर इसका प्रभाव बनाने की कोशिश करना है। इसलिए शोधकर्ता द्वारा विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों का ट्यूशन एवं कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण विषय पर अध्ययन करने का निर्णय किया, इस शोध के परिणाम विद्यार्थियों,अभिभावकों,शिक्षकों एवं नितिकारों आदि के लिये भी उपयोगी होंगे।

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य :– प्रस्तुत शोधकार्य हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये –

- कोटा जिले में ट्यूशन एवं कोचिंग व्यवस्था के प्रति विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- कोटा जिले में टयूशन एवं कोचिंग व्यवस्था के प्रति राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- कोटा जिले में टयूशन एवं कोचिंग व्यवस्था के प्रति कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- कोटा जिले में ट्यूशन एवं कोचिंग व्यवस्था के प्रति छात्र एवं छात्राओं के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाएं ली गई है –

- कोटा जिले के विद्यार्थियों में ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण औसत स्तर का है।
- कोटा जिले के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- कोटा जिले के विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- कोटा जिले के छात्रों और छात्राओं के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

ट्यूशन और कोचिंग :

ट्यूशन और कोचिंग को शुल्क–आधारित ट्यूशन के रूप में परिभाषित किया गया है जो बच्चों को शैक्षणिक विषयों में पूरक निर्देश प्रदान करता है जो वे मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली में पढ़ते हैं।

विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी :

विज्ञान संकाय का चयन कर विशेष विषय के रूप में विज्ञान विषय लेने वाले विद्यार्थी।

कला वर्ग के विद्यार्थी :

कला संकाय का चयन कर विशेष विषय के रूप में कला विषय जैसे समाज शास्त्र, इतिहास,राजनीति विज्ञान आदि विषय लेने वाले विद्यार्थी।

दृष्टिकोण :

दृष्टिकोण का अर्थ – ''दृष्टिकोण'' शब्द का अर्थ विशेष वृत्ति से है। मन की वह वृत्ति जो किसी व्यक्ति, पदार्थ, परिस्थिति, संस्था या विचारों के प्रति हमारे आचरण का रूप निश्चित करती है, जिसके कारण इन बिन्दुओं के प्रति अपनाई गई कोई विशेष धारणा या विचार बना लेते वह दृष्टिकोण कहलाता है।

शोध का परीसीमनः–

प्रस्तुत शोध हेतु निम्न प्रकार सीमा निर्धारण किया गया हैं :–

समयाभाव के कारण वर्तमान शोध प्रबंध को निम्न परिसीमाएं दी गई है –

- प्रस्तावित शोध प्रबन्ध कोटा जिलें के विद्यालयों में अध्ययनरत 600 विद्यार्थियों तक सीमित हैं।
- प्रस्तावित शोध प्रबन्ध कोटा जिलें के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के अध्ययनरत विद्यार्थियों तक सीमित हैं।
- प्रस्तावित शोध प्रबन्ध कोटा जिले के विद्यार्थियों में ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया जाएगा, जिसके लिए स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया।

अध्ययन की विधि

वर्तमान अध्ययन के उद्देश्य के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति को नियोजित किया गया हैं।

अध्ययन का न्यादर्श

वर्तमान अध्ययन के लिए, शोध में कोटा जिले के कुल 20 विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रुप में लिया जाएगा। जिसमें भौगोलिक क्षेत्रफल के आधार पर विद्यालयों का चयन किया जाएगा। कोटा जिले से दस राजकीय एवं दस निजी विद्यालयों के कुल बीस विद्यालयों से (30 विद्यार्थी प्रति विद्यालय) के उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के 600 विद्यार्थियों को यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा चयनित किया जाएगा। न्यादर्श का प्रस्तावित चयन निम्न प्रकार है :–

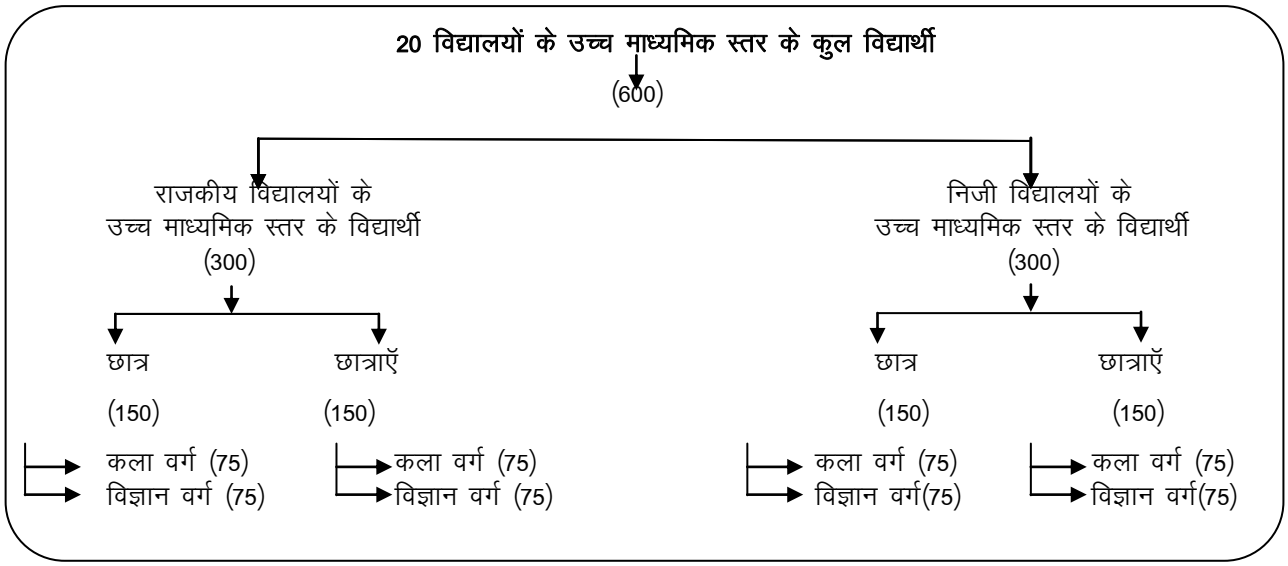

उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोधकर्त्री ने निम्नलिखित उपकरण को प्रयोग मे लिया हैः–

स्वनिर्मित उपकरण

- **उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में ट्यूशन एवं कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण मापनी**
  - **प्रयुक्त सांख्यिकीय तकनीक**

    दत्त सामग्री के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकी तकनीक का उपयोग किया गया है –

    - मध्यमान
    - मानक विचलन
    - टी' परीक्षण
  - **निष्कर्ष :–** वर्तमान अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष हैं।
    - **कोटा जिले के विद्यार्थियों में ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण के स्तर का निष्कर्ष**
      - कोटा जिले के विद्यार्थियों में ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण मापनी के कुल प्राप्तांकों एवं उसके समस्त आयामों का मान औसत से अधिक पाया गया।
      - परिकल्पना संख्या –1 स्वीकृत की जाती हैं जिसके अनुसार ''कोटा जिले के विद्यार्थियों में ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण औसत स्तर का है।'' अस्वीकृत की जाती है।
    - **कोटा जिले के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण के तुलनात्मक विश्लेषण का निष्कर्ष**
    - परिकल्पना संख्या –2 ''कोटा जिले के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।'' कोटा जिले के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण में कुल प्राप्तांक, निजी ट्यूशन एवं कोचिंग लेने के कारण, छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएँ एवं ट्यूशन एवं कोचिंग केंद्रों द्वारा उपयोग की जाने वाली शिक्षण तकनीकें आयामों के सन्दर्भ में अस्वीकृत की जाती है। जिसके अनुसार कोटा जिले के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण में कुल प्राप्तांक, निजी ट्यूशन एवं कोचिंग लेने के कारण, छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएँ एवं ट्यूशन एवं कोचिंग केंद्रों द्वारा उपयोग की जाने वाली शिक्षण तकनीकें आयामों में सार्थक अन्तर होता है। जबकि द्वितीय आयाम निजी ट्यूशन एवं कोचिंग की प्रभावशीलता के सन्दर्भ में स्वीकृत की जाती हैं, जिसके अनुसार कोटा जिले के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण के आयाम निजी ट्यूशन एवं कोचिंग की प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
    - राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण में कुल प्राप्तांक, निजी ट्यूशन एवं कोचिंग लेने के कारण, छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएँ एवं ट्यूशन एवं कोचिंग केंद्रों द्वारा उपयोग की जाने वाली शिक्षण तकनीकें आयामों में सार्थक अन्तर पाया गया। जबकि कोटा जिले के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण के आयाम निजी ट्यूशन एवं कोचिंग की प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

- राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण में कुल प्राप्तांक, निजी ट्यूशन एवं कोचिंग लेने के कारण, निजी ट्यूशन एवं कोचिंग की प्रभावशीलता, छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएँ एवं ट्यूशन एवं कोचिंग केंद्रों द्वारा उपयोग की जाने वाली शिक्षण तकनीकें आयामों में राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों से सार्थक अधिक पाया गया ।

- **कोटा जिले के विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण के तुलनात्मक विश्लेषण का निष्कर्ष**

  - परिकल्पना संख्या –3 ''कोटा जिले के विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।'' कोटा जिले के विद्यालयों के कला वर्ग के विद्यार्थियों एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण में कुल प्राप्तांक एवं ट्यूशन एवं कोचिंग केंद्रों द्वारा उपयोग की जाने वाली शिक्षण तकनीकें आयामों के सन्दर्भ में अस्वीकृत की जाती है। जिसके अनुसार कोटा जिले के विद्यालयों के कला वर्ग के विद्यार्थियों एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण में कुल प्राप्तांक एवं ट्यूशन एवं कोचिंग केंद्रों द्वारा उपयोग की जाने वाली शिक्षण तकनीकें आयामों में सार्थक अन्तर होता है। जबकि द्वितीय आयाम निजी ट्यूशन एवं कोचिंग की प्रभावशीलता एवं तुतीय आयाम छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएँ के सन्दर्भ में स्वीकृत की जाती हैं, जिसके अनुसार कोटा जिले के विद्यालयों के कला वर्ग के विद्यार्थियों एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण के आयाम निजी ट्यूशन एवं कोचिंग की प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

  - विद्यालयों के कला वर्ग के विद्यार्थियों एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण में कुल प्राप्तांक एवं ट्यूशन एवं कोचिंग केंद्रों द्वारा उपयोग की जाने वाली शिक्षण तकनीकें आयामों में सार्थक अन्तर पाया गया। जबकि कोटा जिले के विद्यालयों के कला वर्ग के विद्यार्थियों एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण के आयाम निजी ट्यूशन एवं कोचिंग लेने के कारण, निजी ट्यूशन एवं कोचिंग की प्रभावशीलता एवं छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएँ में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

  - विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण में कुल प्राप्तांक निजी ट्यूशन एवं कोचिंग लेने के कारण, छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएँ एवं ट्यूशन एवं कोचिंग केंद्रों द्वारा उपयोग की जाने वाली शिक्षण तकनीकें आयामों में कला वर्ग के विद्यार्थियों से अधिक पाया गया । जबकि निजी ट्यूशन एवं कोचिंग की प्रभावशीलता आयाम में कला वर्ग के विद्यार्थियों के प्राप्तांक विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों से अधिक पाये गये।

- **कोटा जिले के विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण के तुलनात्मक विश्लेषण का निष्कर्ष**

  - परिकल्पना संख्या –4 ''कोटा जिले के छात्रों और छात्राओं के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।'' कोटा जिले के विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं में ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण में प्रथम आयाम निजी ट्यूशन एवं कोचिंग लेने के कारण एवं चतुर्थ आयाम ट्यूशन एवं कोचिंग केंद्रों द्वारा उपयोग

की जाने वाली शिक्षण तकनीकें आयामों के सन्दर्भ में अस्वीकृत की जाती है। जिसके अनुसार कोटा जिले के विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं में ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण में प्रथम आयाम निजी ट्यूशन एवं कोचिंग लेने के कारण एवं चतुर्थ आयाम ट्यूशन एवं कोचिंग केंद्रों द्वारा उपयोग की जाने वाली शिक्षण तकनीकें आयामों में सार्थक अन्तर होता है। जबकि कुल प्राप्तांक, द्वितीय आयाम निजी ट्यूशन एवं कोचिंग की प्रभावशीलता एवं तृतीय आयाम छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएँ के सन्दर्भ में स्वीकृत की जाती हैं, जिसके अनुसार कोटा जिले के विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण के कुल प्राप्तांक, द्वितीय आयाम निजी ट्यूशन एवं कोचिंग की प्रभावशीलता एवं तृतीय आयाम छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएँ में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

- विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं में ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण में प्रथम आयाम निजी ट्यूशन एवं कोचिंग लेने के कारण एवं ट्यूशन एवं कोचिंग केंद्रों द्वारा उपयोग की जाने वाली शिक्षण तकनीकें आयामों में सार्थक अन्तर पाया गया। जबकि कोटा जिले के विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं के मध्य ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण के कुल प्राप्तांक, द्वितीय आयाम निजी ट्यूशन एवं कोचिंग की प्रभावशीलता एवं तृतीय आयाम छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएँ में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं में ट्यूशन और कोचिंग व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण में कुल प्राप्तांक छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएँ एवं ट्यूशन एवं कोचिंग केंद्रों द्वारा उपयोग की जाने वाली शिक्षण तकनीकें आयामों में छात्रों से अधिक पाया गया। जबकि निजी ट्यूशन एवं कोचिंग लेने के कारण आयाम में छात्रों के प्राप्तांक छात्राओं से अधिक पाये गये।

▪ शैक्षिक निहितार्थ

अध्ययन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए, कुछ सुझाव, जिनमें से अधिकांश स्कूलों के प्रधानाचार्यों, शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों द्वारा दिए गए हैं, इस खंड में प्रस्तुत किए गए हैं। आशा है कि यदि इन सुझावों को राज्य के स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा शामिल किया जाता है, तो राज्य में स्कूल शिक्षा प्रणाली को संशोधित करने में मदद मिलेगी।

- सीखना एक निष्क्रिय ग्रहणशील प्रक्रिया नहीं है बल्कि सार्थक समस्याओं को हल करने के लिए एक सक्रिय अर्थ निर्माण प्रक्रिया है। उन्हें ज्ञान का निर्माण करना चाहिए और निष्क्रिय शिक्षार्थियों के रूप में ज्ञान प्राप्त नहीं करना चाहिए।
- चम्मच से खाना खिलाने की संस्कृति हमारे युवा छात्रों की सोचने की शक्ति, रचनात्मकता और समस्या सुलझाने के कौशल को छीन रही है। इसलिए, छात्रों को अपनी पढ़ाई की जिम्मेदारी खुद लेनी चाहिए।
- माता–पिता को यह महसूस करना चाहिए कि बच्चों को केवल ट्यूशन केंद्रों तक ही सीमित नहीं रखा जा सकता है, बल्कि उन्हें स्व–अध्ययन का मौका दिया जाना चाहिए और खेल, खेल और मनोरंजन जैसी मनोरंजक गतिविधियों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।
- माता–पिता को स्कूल के प्रधानाचार्यों, कक्षा शिक्षकों और विषय शिक्षकों के साथ नियमित संपर्क रखना चाहिए ताकि वे स्कूल में अपने बच्चों की प्रगति को समझ सकें और यदि माता–पिता को स्कूल से ऐसा निरंतर संबंध मिल सके तो उनके बच्चों को निजी ट्यूशन की आवश्यकता होगी। काफी हद तक कम किया जा सकता है.

- शिक्षकों को यह महसूस करना चाहिए कि आज सीखे गए ज्ञान/अवधारणाओं को कल संशोधित करने के लिए बदलना चाहिए। इसलिए, उन्हें छात्रों द्वारा तथ्यों को याद करने पर जोर देने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि शिक्षकों को छात्रों को स्वतंत्र विचारक और ज्ञान के निर्माता के रूप में विकसित करने में मदद करनी चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नेल्सन और शवित (2002) क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर व्यक्तिवाद और उपलब्धि मूल्यों के बीच संबंधों का अध्ययन, शिक्षा का सामाजिक मनोविज्ञानः अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, अ21 द4 पृ.सं.1032–1042.
2. कंवर, जसविन्द्र पाल सिंह (2004) .विद्यालय एवं महाविद्यालयों के षिक्षकों में षिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन'. अप्रकाशित पी.एच.डी. पंजाब विष्वविद्यालय, पंजाब.
3. रमेश पोन्नमबाला (2005)सेक्स, समुदाय, इलाके और वैकल्पिक अध्ययन, पी–एच.डी. एज्यूकेषन,कर्नाटक यूनिवर्सिटी।
4. कुमार,अजय (2007) पुरूष तथा महिला छात्राध्यापकों के मूल्यों का अध्ययन, पीएच.डी., एडु., रोहिलखंड यूनिवर्सिटी।
5. कारक एरोल (2008) ''तुर्की में अध्यापन व्यवसाय के ज्ञान के बारे में षिक्षक प्रषिक्षकों की अभिवृत्ति'' शोधकार्य, साइप्रस अन्तराष्ट्रीय विष्वविद्यालय.
6. मिश्रा,दीपक(2009) .स्प्रिंगर के मूल्यों के अनुसार शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन, एज्यूट्रेकस, नीलकमल पब्लिकेषन अप्रेल 2009, वाल्यमू 08,न.4 पृ.सं. 38–41।
7. शर्मा (2009) दृष्टि अक्षम बालकों के विद्यालय के शिक्षकों के गणित अध्ययन के मूल्य में आने वाली समस्याओं का अध्ययन जर्नल ऑफ ऑल इंडिया एसोसिएशन फॉर एजुकेशनल रिसर्च, वॉल्यूम 19, नंबर 3 और 4.
8. सिंह,एस. (2010)विकलांग विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यक्तित्व, मूल्यों शिक्षण अमिक्षमता और कृत्य संतोष का अध्ययन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन–न्यू फ्रंटियर्स इन एजुकेशन, वॉल्यूम. 41, नंबर 4.पृ.सं.344–352.
9. ऑलिम, अक्कस (2010) षिक्षक उद्विग्नता स्तर और उनकी षिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति हाक्सेटेप विष्वविद्यालय, तुर्की में प्रस्तुत शोध पत्र.
10. हुलियास, येसिल (2011) तुर्की भाषा के अध्यापकों की षिक्षण के प्रति अभिवृत्ति'' प्रायोजनात्मक शोधकार्य, साइप्रस अन्तराष्ट्रीय विष्वविद्यालय.

❖◆❖